1857 के विद्रोह में दलितों का योगदान

डॉ. विनोद कुमार चौधरी

1857 के संग्राम में दलितों की भूमिका को दो स्तरों पर बांट कर देखा जा सकता है। एक तो दलित जातियों का अलग–अलग संगठित विद्रोह है। दूसरा दलित जातियों के सदस्यों की व्यक्तिगत स्तर पर भागीदारी है। जैसे भंगी समाज की एक महिला की चर्चा की जाती है, जिसे मुफ्तसा बेगम के खिताब से उनकी बहादुराना भूमिका के कारण नवाजा गया था।

उत्तर प्रदेश एवं बिहार के गाँवों में मौजूद कई छोटे मंदिर और 'थाना' की चर्चा करते हैं, जिन्हें 'स्थानीय लोगों, विशेषकर दलितों के बीच काफी पवित्र माना जाता है इन थानों के इतिहास में झांकने से पता चला कि वे 1857 में शहीद हुए दलितों की स्मृति में बनाए गए हैं। इस तरह के स्थल आजमगढ़, साहबपुर, आरा और 1857 के केन्द्र रहे उत्तर भारत के अन्य इलाकों में पाए जाते हैं।' उनके मुताबिक 'गदर में दलितों के योगदान पर चर्चा करने वाली कई किताबें महत्वपूर्ण हैं।